से जानने में आता है तथा उनके भक्तों की इच्छा भी उनकी इच्छा के समान ही कल्याणकारी है। इनको पूर्ण करते हुए जीवन-संघर्ष में विजय प्राप्त करे।

सञ्जय उवाच।

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।।३५।।

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा, **एतत्**=इस; **श्रुत्वा**=सुनकर; **वचनम्**=वचन को; **केशवस्य**=भगवान् श्रीकृष्ण के; **कृताञ्जलिः**=हाथ जोड़े हुये; **वेपमानः**=काँपता हुआ; **किरीटी**=अर्जुन; **नमस्कृत्वा**=नमस्कार करके; **भूयः**=पुनः; **एव**=भी; **आह**=बोला; **कृष्णम्**=भगवान् कृष्ण से; **सगद्गदम्**=गद्गद वाणी से; **भीतभीतः**=भयभीत हुआ; **प्रणम्यः**=प्रणाम करके।

अनुवाद

संजय ने धृतराष्ट्र से कहा, हे राजन्! श्रीभगवान् से इन वचनों को सुनकर भयभीत अर्जुन काँपता हुआ हाथ जोड़ कर बारम्बार प्रणाम करके गद्गद वाणी से बोला।।३५।।

तात्पर्य

पूर्व में वर्णन कर चुके हैं कि श्रीभगवान् के विश्वरूप-दर्शन से अर्जुन आश्चर्य-चकित रह गया। ऐसे में स्वाभाविक ही है कि वह श्रीकृष्ण को श्रद्धाभाव से बारम्बार प्रणाम करता हुआ सखा के स्थान पर रोमांचित भक्त के रूप में करबद्ध प्रार्थना कर रहा है।

अर्जुन उवाच।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।३६।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **स्थाने**=यह योग्य ही है; **हृषीकेश**=हे इन्द्रियों के अधीश्वर; **तव**=आपके; **प्रकीर्त्या**=संकीर्तन से; **जगत्**=सम्पूर्ण संसार; **प्रहृष्यति**=अति हर्षित होता है; **अनुरज्यते**=अतिशय अनुराग को प्राप्त होता है; **च**=तथा; **रक्षांसि**=असुर; **भीतानि**=भयभीत हुए; **दिशः**=दिशाओं में; **द्रवन्ति**=भागते हैं; **सर्वे**=सब; **नमस्यन्ति**=नमस्कार करते हैं; **च**=तथा; **सिद्धसंघाः**=सिद्ध समुदाय।

अनुवाद

हे हृषीकेश! आपका नाम-संकीर्तन सुनकर सम्पूर्ण विश्व अति हर्षित और आपमें अनुरक्त हो रहा है। सभी सिद्धप्राणी आपको प्रणाम करते हैं; जबकि राक्षसगण